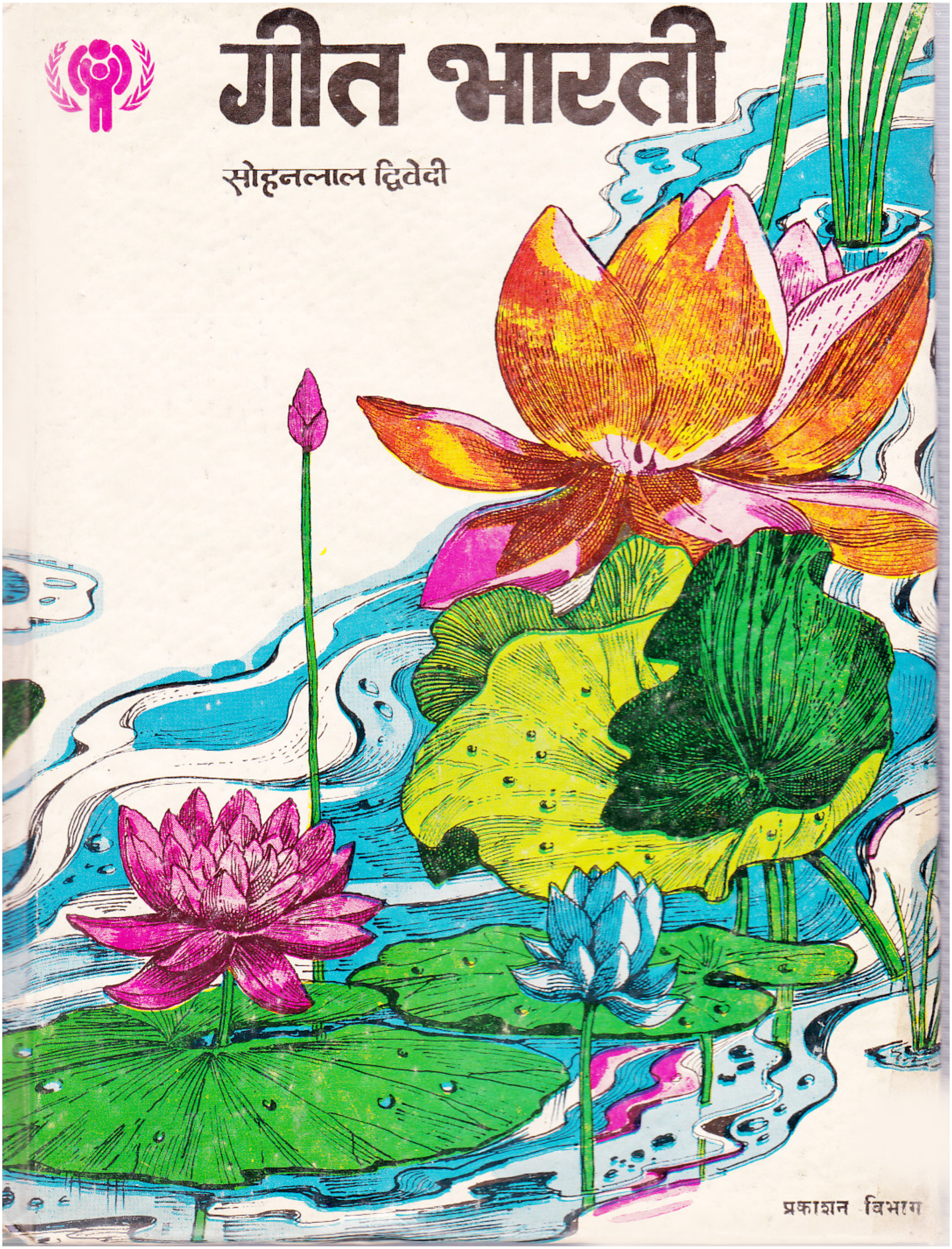
गीत भारती

सोहनलाल द्विवेदी



प्रकाशन विभाग

गीत भारती

सोहनलाल द्विवेदी

कलाकार
ब्रह्मदेव शर्मा

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

प्रथम संस्करण : दिसम्बर 1979 (पौष 1901)

मूल्य : 6.00

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय,
पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित

विक्रय केन्द्र ● प्रकाशन विभाग

सुपर बजार (दूसरी मंजिल) कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
कामर्स हाउस, करीमभाई रोड, बालार्ड पायर, बम्बई-400038
8, एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700001
शास्त्री भवन, 35, हैड्डोज रोड, मद्रास-600006
बिहार स्टेट को-आपरेटिव बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना
निकट गवर्नमेंट प्रेस, प्रेस रोड, त्रिवेन्द्रम

नवदीप प्रिंटर्स, C-27 इन्डस्ट्रियल एरिया, गाजियाबाद द्वारा मुद्रित

भूमिका

कविता भावनाओं की सृष्टि है और कवि उसका सर्जक। बाल-मन पर कविता अपनी अमिट छाप अंकित कर जाती है। बच्चा जब किसी छन्दोबद्ध रचना को गुनगुनाता है तो उसके आनन्द की सीमा नहीं रहती। उसका समूचा व्यक्तित्व प्रभावित होता है और फिर आती है उसमें एक ऐसी सुदृढ़ता जिसमें विकास के नए सोपान प्रस्फुटित होते हैं।

पं० सोहनलाल द्विवेदी गांधीवादी विचारधारा के मूर्धन्य कवि हैं। उन्होंने जहां 'भैरवी' की सर्जना कर कोटिशः भारतीयों को राष्ट्रीय आन्दोलन में जूझने के लिए प्रेरित किया, वहां बाल-काव्य का सृजन कर करोड़ों बच्चों को राष्ट्रीयता, देशभक्ति और मानव-सेवा का पाठ पढ़ाया। बाल साहित्य में पंडित जी का योगदान अभूतपूर्व है। अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष के अवसर पर उनकी यह अनुपम कृति बाल-पाठकों को प्रेरित करेगी, गुदगुदाएगी, तथा आगे बढ़ने का संबल बनेगी, ऐसी आशा है।

—राम धमीजा

अनुक्रम

नया हिन्दुस्तान

हम स्वतंत्र भारत के बच्चे
हम स्वतंत्र मां की सन्तान,
हम सब मिल निर्माण करेंगे
आज वह नया हिन्दुस्तान।
जहां खेत लहराते हों
ले अन्न धान की हरियाली,
दूध दही की नदियां बहतीं
घर-घर में हो खुशहाली।
नहीं दूसरों से चाहेंगे
वे दें हमें अन्न का दान,
हम सब मिल निर्माण करेंगे
आज वह नया हिन्दुस्तान।
जहां गरीबी नहीं रहेगी
नहीं रहेगी बेकारी,
सब मिल करके काम करेंगे
बन सम्पत्ति के अधिकारी।
नहीं दूसरों से चाहेंगे
आकर करें हमारा त्राण,
हम सब मिल निर्माण करेंगे
आज वह नया हिन्दुस्तान।

जहां रहेगा हममें इतना
प्रेम और संगठन अपार,
देख हमारी शक्ति खुलेगा
अपने आप विजय का द्वार।
नहीं दूसरों से मांगेंगे
बाहर आकर न्याय विधान,
हम सब मिल निर्माण करेंगे
आज वह नया हिन्दुस्तान।

★ ★

भारत का ध्यान

हिमगिरि मेरा, गंगा मेरी
मेरी ही यमुना प्यारी
काशी और अयोध्या मेरी
मेरी ही मथुरा न्यारी
मेरे राम, कृष्ण भी मेरे
मेरी ही जननी सीता
मेरे वह पुराण शास्त्र हैं
मेरी ही भगवद्गीता
ज्यों-ज्यों मुझको अपने प्यारे
भारत का आता है ध्यान
त्यों-त्यों होता जाता हूं मैं
लघु होकर भी नित्य महान।

मीठे बोल

मीठा मीठा होता खाजा
मीठा होता हलुवा ताजा

मीठे रसगुल्ले अनमोल
सबसे मीठे मीठे बोल !

मीठा होता पुश्रा सुहारी
मीठी होती कुलफी न्यारी

मीठे होते गट्टे गोल
सबसे मीठे मीठे बोल !

मीठा होता दाख छुहारा
मीठा होता शक्कर पारा

मीठा होता रस का घोल
सबसे मीठे मीठे बोल !

मीठे होते आम निराले
मीठे होते जामुन काले

मीठा शरबत है श्रनमोल
सबसे मीठे मीठे बोल !

बादल बादल बरसो पानी

बादल बादल बरसो पानी
आज नहाएंगे मनमानी।

रिमझिम बरसो
रम रम बरसो
धीरे धीरे
थम थम बरसो

जिससे हो न हमें हैरानी
बादल बादल बरसो पानी।

ठंडा ठंडा
तन हो मेरा
डंडा डंडा
मन हो मेरा

मर जाए गरमी की नानी
बादल बादल बरसो पानी।

प्रार्थना

तन हो सुन्दर, मन हो सुन्दर
प्रभु मेरा जीवन हो सुन्दर

जगना सुन्दर, सोना सुन्दर
घर का कोना कोना सुन्दर

प्रभु मेरा आंगन हो सुन्दर
तन हो सुन्दर मन हो सुन्दर

कपड़े सुन्दर, खाना सुन्दर
वाणी सुन्दर, गाना सुन्दर

प्रभु मेरा बचपन हो सुन्दर
तन हो सुन्दर मन हो सुन्दर

दिन हों सुन्दर, रातें सुन्दर
सब हों मेरी बातें सुन्दर

प्रभु मेरा क्षण-क्षण हो सुन्दर
प्रभु मेरा जीवन हो सुन्दर।

हवा का झोंका

बहा हवा का शीतल झोंका
डोल उठी डाली डाली,
बहा हवा का शीतल झोंका
कुहुक उठी कोयल काली।

बहा हवा का शीतल झोंका
बेलें उठीं लहर में झूल,
बहा हवा का शीतल झोंका
कलियां चटक बन गईं फूल।

सोए भौंरे जाग उठे
गीतों से गूंज रहा भूतल,
एक हवा के झोंके ने
भर दी दुनिया में हलचल।

अगर कहीं मैं पैसा होता !

पढ़े लिखों से रखता नाता
मैं मूर्खों के पास न जाता,

दुनिया के सब संकट खोता,
अगर कहीं मैं पैसा होता !

जो करते दिन रात परिश्रम
उनके पास नहीं होता कम

बहता रहता सुख का सोता
अगर कहीं मैं पैसा होता !

रहता दुष्ट जनों से न्यारा
मैं बनता सुजनों का प्यारा

सारा पाप जगत में धोता
अगर कहीं मैं पैसा होता !

व्यर्थ विदेश नहीं मैं जाता
नित स्वदेश से रखता नाता

भारत आज न ऐसे रोता
अगर कहीं मैं पैसा होता !

सपने में

अम्मा आकर काजल देती
औ अनखनियां सपने में ।

भैया आकर मुझे उठा
लेता है कनियां सपने में ।

मुन्नू आता, चाचा आते
दादा आते सपने में ।

खुल जाता है बंद मदरसा
गुरू पढ़ाते सपने में ।

पेड़ खड़ा दिखलाता,उस पर
चढ़ती गिल्ली सपने में ।

करती म्याऊं म्याऊं म्याऊं
आती बिल्ली सपने में ।

मिल जाते हैं खेल खिलौना,
खेल खिलौना सपने में ।

बिछ जाती है खटिया मेरी
और बिछौना सपने में ।

नानी बैठ कहानी कहती
हम सुनते हैं सपने में ।

फुलवारी में घूम घूम
कलियां चुनते हैं सपने में।
कुंजड़िन आकर बेचा करती
आलू भंटा सपने में।
टन-टन-टन-टन बज उठता
छुट्टी का घंटा सपने में।
कोई ऐसा काम नहीं
जो नहीं दीखता सपने में।
नाई आता, धोबी आता
माली आता सपने में।
डस लेता है कभी-कभी
आ मुझे ततैया सपने में।
दुख के मारे चिल्लाता मैं
दैया दैया सपने में।
रोता हूं चिल्ला पड़ता हूं
गिर कर लड़खड़ सपने में।
आंख खुली, तब बात समझता
थी यह गड़बड़ सपने में।

नीम का पेड़

मेरे घर के पास लगा है
पेड़ नीम का हरा-भरा,
उसकी डालें झुक-झुक छूतीं,
मेरे रहने का कमरा।
अभी-अभी निकली फुनगी में
नई-नई प्यारी कोंपल,
लाल-बैंजनी रंग देखकर
मेरा मन बनता शीतल।
रोज सबेरे चिड़ियां आकर
इसमें शोर मचाती हैं,
तरह-तरह के गाने गाकर
मेरा दिल बहलाती हैं।
दिन भर ही गाती रहती हैं
इसमें चिड़ियां चहक-चहक,
इसके फूल मस्त कर देते
चौबिस घंटे महक-महक।
जब सावन आता है तब
इसकी डालों में झूला डाल,
मैं झूला करता हूं इसमें
झूला करता है गोपाल।

झूला करते लड़के-लड़की
सभी मुहल्लों के मेरे,
इसी नीम के कारण वे सब
रहते हैं मुझको घेरे।
वैसे भी मैं रोज बैठता
इसकी छाया के नीचे,
खेला करता आंख-मिचौनी
कभी-कभी आंखें मींचे।
नीम न होता अगर सामने
तो घर उजड़ा दिखलाता,
हरियाली के बिना हमारा
दिल न यों हरा रह पाता।
कैसे धन्यवाद दूं उसको
जिसने है यह नीम दिया,
मुझको अपना पुत्र मानकर
मुझको प्यार असीम किया।
रहता है यह नीम हरा जो
रहती जो इसमें छाया,
समझ रहा हूं इसमें भी है
उस करुणामय की माया।

सुन्दरता की पहचान

सुन्दर मुखड़ा कौन ?
नहीं जो गोरा हो या काला हो ।

सुन्दर मुखड़ा वही
सत्य का जिसमें तेज निराला हो ।

सुन्दर आंखें कौन ?
नहीं जो बड़ी रहें, या छोटी हों ।

सुन्दर आंखें वही
प्यार की जो छू सकती चोटी हों ।

सुन्दर बातें कौन ?
नहीं जो सुनने में लगती प्यारी ।

सुन्दर बातें वही
जो कि होवें सचमुच ही हितकारी ।

सुन्दर फिर है कौन ?
नहीं जो सुन्दर या बदसूरत हो ।

सुन्दर सचमुच वही
कि जो सुन्दर कामों की मूरत हो ।

चाबी का गुच्छा मजेदार

चलने में देता है बहार
चाबी का गुच्छा मजेदार।

जब दादा चलते झूम-झूम
तब गुच्छा बजता घूम-घूम
पग-पग पर खन-खन झनकदार

चलने में देता है बहार
चाबी का गुच्छा मजेदार।

बैठते कहीं दादा जिस छन
गुच्छा जमीन पर बजता खन
फिर उठने में झन-झन अपार

चलने में देता है बहार
चाबी का गुच्छा मजेदार।

चाबियां, अंगूठी, दंतखुदनी
छल्ले में सब हैं गुथीं बनीं
लो देखो इनको फेर-फार

चलने में देता है बहार
चाबी का गुच्छा मजेदार।

आंधी आई

उल्टी छानी, उल्टे छप्पर
टूटे खपरैलों के खप्पर।
खूंटे को तोड़ भगी गाई
ग्रांधी ग्राई, आंधी ग्राई।

उड़ गए किताबों के पन्ने
पंडित जी बैठे चौकन्ने।
सब भूल गई अब गुरुग्राई
आंधी ग्राई, ग्रांधी ग्राई।

हैं थाले गिरे पनाले में
बर्फी-पेड़े हैं नाले में।
भौंचका खड़ा है हलवाई
आंधी ग्राई, ग्रांधी ग्राई।

नदियों में उल्टी उधर नाव
मल्लाह गए सब भूल दांव।
हैं पाल न देते दिखलाई
ग्रांधी ग्राई, ग्रांधी ग्राई।

उड़ गए बजाजों के कपड़े
पेड़ों पर जाकर ग्रड़े गड़े।
किसने यह गड़बड़ फैलाई?
ग्रांधी ग्राई, ग्रांधी ग्राई।

धोबी का गद्हा छोड़ घाट,
भग चला पांव में कसे पाट
सब डरे कौन ग्राफत ग्राई
ग्रांधी ग्राई, ग्रांधी ग्राई।

छाया

पीछे-पीछे कौन ग्रा रही ?
संग-संग यह कौन ग्रा रही ?
दायें जाती, बायें जाती,
कभी सामने है आ जाती।
लम्बी कभी, कभी है छोटी,
दुबली कभी, कभी है मोटी,
तरह-तरह के रूप बनाती,
साथ-साथ पर हरदम जाती।
कभी-कभी बनती है ऐसे,
मेरी ही सूरत हो जैसे,
ग्रजी ! नहीं जादू या माया,
ग्ररे ! तुम्हारी ही यह छाया।
छाया ही से काम तुम्हारे,
चलते पीछे-पीछे सारे,
जैसा जिसने काम बनाया,
वैसी उसने पाई छाया।
दिखलाओ तुम सब पर दाया,
बने तुम्हारी शीतल छाया।

ओस

हरी घास पर बिखेर दी हैं
ये किसने मोती की लड़ियां ?
कौन रात में गूंथ गया है
उज्ज्वल हीरों की कड़ियां ?
जुगुनू से जगमग जगमग ये,
ये कौन चमकते हैं यों चमचम ?
नभ के नन्हें तारों से ये
कौन दमकते हैं यों दमदम ?
लुटा गया है कौन जौहरी,
अपने घर का भरा खजाना ?
पत्तों पर, फूलों पर, पग पग,
बिखरे हुए रतन हैं नाना।
बड़े सबेरे मना रहा है,
कौन खुशी में यह दीवाली ?
वन उपवन में जला दिया है
किसने दीपावली निराली ?
जी होता, इन ओस कणों को,
अंजलि में भर घर ले आऊं,
इनकी शोभा निरख निरख कर,
इन पर कविता एक बनाऊं।

घर की याद

याद ग्रा रहा वह घर ग्रपना।
लगता है जैसे हो सपना।

पेड़ नीम का जहां खड़ा था,
जो वर्षों से यहीं बढ़ा था,
जिसमें डाल-डाल कर झूला,
मैं ग्रपने बचपन में झूला।

और ग्रटारी के भी ऊपर,
ऊंची बनी अटारी सुन्दर,
जहां पतंगें रोज उड़ाई,
जहां पतंगें रोज लड़ाई।

इसमें ही रहते थे दादा,
पहना करते कुर्त्ता सादा,
ग्रनसुइया थी बहन हमारी,
जो बचपन में स्वर्ग सिधारी।

ग्रौर सभी हैं बहनें भाई,
किन्तु नहीं है बुढ़िया दाई,
जो थी खाना रोज बनाती,
बड़े प्यार से हमें खिलाती।

नहीं रहे हैं अपने दादा,
जिनकी याद हमेशा, आ आ,
आंखों में ग्रांसू भर जाती,
है उदास हर क्षण कर जाती।

रहते थे बाबाजी प्यारे,
वे सबसे लगते थे न्यारे,
हमको रोज मिठाई लाते,
नई कहानी रोज सुनाते।

जो दादा ने हमको मारा,
तो बाबा ने ग्रा पुचकारा,
नहीं कभी बाबा ने मारा,
सदा प्यार से हमें दुलारा।

पर घर अपना ग्रब भी वैसा,
बदला कहीं न, पहले जैसा,
बदल गया है सभी जमाना,
बदला है घर नहीं पुराना।

बाल-विनय

चाहे चमके किरण सुनहली,
चाहे हो काली बरसात।
हँसू हमेशा हृदय खोलकर,
हँसू खुशी से मैं दिन रात।

ओस बिन्दु लूं सिर पर जैसे,
वैसे ओलों की बौछार।
उठकर हँसू हँसू गिरकर मैं,
सभी दशा में हँसू अपार।

सुख में हँसू, हँसू दुख में भी,
सुख दुख यों हों एक समान।
फूलों का हँसने वाला यह,
जीवन दो मुझको भगवान।

भारतवर्ष

यह भारतवर्ष हमारा है !
हमको प्राणों से प्यारा है !!
है यहां हिमालय खड़ा हुआ,
सन्तरी सरीखा अड़ा हुआ।
गंगा की निर्मल धारा है !
यह भारतवर्ष हमारा है !!

क्या ही पहाड़ियां हैं न्यारी ?
जिनमें सुन्दर झरने जारी।
शोभा में सबसे न्यारा है !
यह भारतवर्ष हमारा है !!

है हवा मनोहर डोल रही,
बन में कोयल है बोल रही।
बहती सुगन्ध की धारा है !
यह भारतवर्ष हमारा है !!

जन्मे थे यहीं राम सीता,
गूंजी थी यहीं मधुर गीता।
यमुना का श्याम किनारा है !
यह भारतवर्ष हमारा है !!

तन मन धन प्राण चढ़ाएगें,
हम इसका मान बढ़ाएंगे।
जग का सौभाग्य सितारा है !
यह भारतवर्ष हमारा है !!

कलम की कहानी

है मेरी अति करुण कहानी !
वही मुझे है यहां सुनानी !

मैंने बहुत कष्ट है पाया,
इससे सूखी मेरी काया,
मुझे लोग जंगल से लाते,
मात पिता से हाथ छुटाते ।

मेरा सुन्दर रंग मिटाते,
काला और कुरूप बनाते,
चाकू से फिर शीश काटकर,
मेरी जीभ छेदते हैं नर ।

आगे क्या दूं अधिक हवाला,
आखिर मुंह कर देते काला,
किन्तु, भुला यह सभी बुराई,
करती उनकी सदा भलाई ।

प्रतिदिन नए लेख लिखती हूं !
मैं दुनिया का हित करती हूं! !

मुस्कानों से भर दो घर वन

घर से निकलो तो मुस्काओ,
पथ पर फिसलो तो मुस्काओ,
मुस्कान न छूटे ओठों से,
गिर मुस्काओ, उठ मुस्काओ।
मुस्कानों से भर दो कण कण !
मुस्कानों से भर दो घर वन !

तन में उमंग, मन में उमंग,
नस नस में, जीवन में उमंग।
मुस्कानों की खुशियाली से,
पुलकित कर दो तुम अंग अंग,
जीवन में आए नवजीवन,
मुस्कानों से भर दो घर वन !

चल पड़ो जिधर ही मुस्काओ,
पग पग उजियाली छिटकाओ,
हो जाये सुखमय सुगम पंथ,
हँस हँस कर फूल बिछा जाओ।

मुस्कानों से भर दो कण कण !
मुस्कानों से भर दो घर वन !!

आगे आओ

पीछे रहना है ठीक नहीं
यह है वीरों की लीक नहीं
मत सकुचाग्रो मत घबड़ाओ
आगे आग्रो
आगे आओ ।

तुम लगते हो नादान ग्रभी
इस पथ से हो ग्रनजान अभी
सब समझोगे साहस लाग्रो
ग्रागे ग्राग्रो
ग्रागे ग्राग्रो ।

यदि आज बढ़ोगे ग्रभी नहीं
तो बढ़ न सकोगे कभी कहीं
इसलिए बढ़ो बढ़ते जाग्रो
ग्रागे आओ
ग्रागे आओ ।



प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार